युवा सम्मेलन में "आत्मनिर्भर भारत के लिए युवाओं को कुशल बनाना" विषय पर असम के माननीय राज्यपाल का भाषण

दिनांक 9 सितंबर 2023, शनिवार	समय : 10:30 AM	स्थान : Mayong Anchalik College

- राज्य के जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी, पर्यटन, कौशल, रोजगार और उद्यमिता विभाग के मंत्री श्री जयंत मल्ल बरुवा जी,
- असम कौशल विकास मिशन (ASDM) के मिशन निदेशक एवं आईपीएस अधिकारी श्री अंकुर जैन जी,
- काउंसिल फॉर टीचर एडुकेशन फाउंडेशन (CTEF) की अंतर्राष्ट्रीय महासचिव प्रो, निलिमा भागवती जी,
- मायोंग आंचलिक कॉलेज के प्रधानाचार्य डॉ. महानंदा बोरा जी,
- गौहाटी विश्वविद्यालय एनएसएस प्रकोष्ठ के संयोजक एवं विद्यार्थी कल्याण के निदेशक डॉ. रंजन कुमार काकति जी,
- उपस्थित अन्य अतिथिगण,
- महाविद्यालय के सम्मानित शिक्षकगण एवं कर्मचारीगण
- मेरे प्यारे विद्यार्थियों,
- मीडिया के हमारे मित्रों,
- देवियों और सज्जनों

आप सभी को मेरा नमस्कार,

आज इस युवा सम्मेलन में आप सबके बीच उपस्थित होकर मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। इस युवा सम्मेलन में चर्चा के लिए निर्धारित किया गया विषय - 'आत्मनिर्भर भारत के लिए युवाओं को कुशल बनाना', निश्चित रूप से बहुत महत्वपूर्ण, सामयिक और सार्थक है।

भारत आज दुनिया के शक्तिशाली देशों में विशेष स्थान रखता है, क्योंकि भारत में युवा मानव संसाधनों का एक बड़ा समूह है, जो आत्मनिर्भर भारत के सपने को हकीकत में बदलने की ताकत रखता है। इसलिए देश के विकास और निर्माण के लिए हमारी युवा शक्ति को कुशल बनाना आज की अहम आवश्यकता है।

मित्रों,

तेजी से विकसित हो रही दुनिया में दक्षता के साथ सामंजस्य स्थापित करने के लिए शिक्षित और प्रशिक्षित युवा शक्ति अपरिहार्य है। परिवर्तन का जो पैमाना आज हम देख रहे हैं वह मानव इतिहास में अभूतपूर्व होगा। प्रौद्योगिकी की इस दुनिया में स्टार्ट-अप और नवाचार हमारे दैनन्दिन जीवन को अविश्वसनीय तरीके से प्रभावित करने जा रहे हैं। महत्वपूर्ण बात यह है कि इस व्यापक बदलाव में हमारे युवा किस प्रकार अपनी भूमिका निभाएंगे।

देखा गया है कि युवा स्वभाव से खुले विचारों के होते हैं, जो नये विचारों के साथ प्रयोग करने को सदैव तैयार रहते हैं। वे किसी भी क्रांति के कर्णधार बनने को तत्पर रहते हैं। परिणामस्वरूप हमारे देश में हो रहे परिवर्तन हमारे युवाओं के लिए नये अवसर प्रदान करने वाले हैं।

देवियों और सज्जनों,

भारत एक युवा राष्ट्र है और हम सौभाग्यशाली हैं कि आज हमारे पास विश्व की सर्वाधिक युवा शक्ति है। हमें इस युवा शक्ति का उचित रूप से प्रबंधन करना होगा। हमारा यह भी कर्त्तव्य है कि हम युवा शक्ति को गुणात्मक शिक्षा के माध्यम से कुशल और दक्ष बनाएं, उनका उचित मार्गदर्शन करें। उन्हें प्रशिक्षित करें तथा उद्यम शुरू करने के लिए प्रोत्साहित करें ताकि वे अपने और दूसरों के लिए रोजगार के अवसर पैदा कर सकें।

हमें युवाओं को राष्ट्रीय भावना से प्रेरित करने के लिए भी काम करना होगा, तभी हम देश की युवा शक्ति को सही दिशा में आगे बढ़ाने में सफल होंगे। यहां स्वामी विवेकानन्द द्वारा कठोपनिषद के प्रथम अध्याय के एक मंत्र के अनुरूप 'उठो जागो ..' के उद्घोष का उल्लेख करना उचित होगा, जिसमें उन्होंने भारत के सुसुप्त जनमानस को जगाने का काम किया था।

विवेकानन्द ने युवाओं में विकास के पथ पर चलने के लिए नया उत्साह भरा। उन्होंने संभवतः अपने समय से सौ साल बाद के भारत को देख लिया था, इसीलिए उन्होंने कहा था "उठो जागो और तब तक मत रुकना जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाये।" ओज और ऊर्जा से ओतप्रोत स्वामी विवेकानन्द का जीवन हमारे देश के युवाओं के लिए आज भी प्रेरणास्रोत है।

मेरे प्यारे युवाओं,

किसी भी राष्ट्र की सामाजिक-आर्थिक तथा सांस्कृतिक उन्नति में उसके युवाओं की भागीदारी सबसे महत्वपूर्ण होती है। हमारे युवा ही वह रीढ़ है, जो देश और समाज को नई ऊंचाइयों पर ले जाने की क्षमता और सामर्थ्य रखते हैं। गहन ऊर्जा और उच्च महत्वाकांक्षाओं से ओतप्रोत युवा स्वयं के साथ-साथ समाज को बेहतर बनाने तथा राष्ट्र के निर्माण में योगदान देने में भी आगे रहते हैं। यह कहना सही होगा कि युवा जितना राष्ट्रप्रेमी, उन्नत व कौशलयुक्त होगा, देश की उन्नति की संभावनाएं भी उतनी ही अधिक प्रबल होंगी।

भारत का इतिहास साक्षी है कि देश में जितने भी बड़े परिवर्तन हुए हैं, वे युवाओं की प्रबल इच्छा शक्ति से ही संभव हो पाये हैं। आवश्यकता केवल इस बात की रहती है कि युवाओं का सकारात्मक मार्गदर्शन कर उन्हें सही दिशा में प्रेरित किया जाये।

आज युवाओं को उनके जीवन में आगे बढ़ने के लिए उनकी क्षमता के अनुसार विभिन्न क्षेत्रों में उन्हें रोजगार और उद्यमिता के अवसर प्रदान किये जायें ताकि वे सही रास्ते पर आगे बढ़ सकें। संस्कारों से परिपूर्ण गुणवत्तायुक्त शिक्षा और समुचित प्रशिक्षण की कमी के कारण हमारे देश में बेरोजगारी की समस्या व्याप्त है। इससे निपटने के लिए राष्ट्र की युवा शक्ति को आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में एक मजबूत आधारस्तंभ के रूप में संकल्पपूर्वक आगे लाना जरूरी है।

युवा पीढ़ी में स्किल व कार्य-कौशल विकसित कर राष्ट्र के उत्थान हेतु समर्पित करने की आवश्यकता है। स्किल यानि हुनर व्यक्ति के काम को ही नहीं, उसकी प्रतिभा एवं प्रभाव को भी बेहतर बनाता है।

आत्मनिर्भर भारत अभियान की सफलता के लिए समस्त नागरिकों के साथ युवाओं को प्रेरित करते हुए प्रधानमंत्री श्री मोदी ने जिस तरह से लक्ष्य साधक चार 'एल' यानी लैंड, लेबर, लिक्विडिटी और लॉ से जुड़ी बारीकियों पर जोर देते हुए इकोनॉमी, इंफ्रास्ट्रक्चर, सिस्टम, डेमोग्राफी और डिमांड जैसे पांच पिलर्स को मजबूती देने का आह्वान किया है, उससे यह स्पष्ट है कि इन नौ शब्दों की सीढ़ियों के सहारे आत्मनिर्भरता के लक्ष्य को हासिल किया जा सकता है।

आत्मनिर्भर भारत अभियान की सफलता के सदंर्भ में हमें यह समझना चाहिए कि भारत जब आत्मनिर्भरता की बात करता है तो वह आत्म केंद्रित व्यवस्था का पक्षधर कदापि नहीं होता, बल्कि भारत की आत्मनिर्भरता में संसार के सुख-शांति, सहयोग और अमन-चैन का चिंतन निहित होता है। कहना न होगा कि भारत के चिंतन और सतत प्रयासों का प्रभाव विश्वकल्याण पर भी पड़ता है।

हम अपने समक्ष उपस्थित चुनौतियों का सामना साहस और कौशल से ही कर सकते हैं। यह भी सत्य है कि चुनौतियां सदैव अपने साथ अवसर लेकर आती हैं। चुनौतियों को अवसर में बदलने की कला ही तो कौशल है।

एक सफल व्यक्ति अपने कौशल को बढ़ाने का कोई भी मौका जाने नहीं देता और सदैव नये अवसरों की तलाश में रहता है। जिसमें कौशल के प्रति आकर्षण नहीं है, कुछ नया सीखने की ललक नहीं है तो उसका प्रवाहमान जीवन ठहर-सा जायेगा, उसमें रुकावट आ जायेगी।

आवश्यकता इस बात की है कि हम विभिन्न विधाओं में पारंगत होकर महाभारत के अर्जुन की तरह लक्ष्य भेदन की दिशा में आगे बढ़ें। ज्ञान व कौशल केवल रोजगार का माध्यम मात्र नहीं हैं।

जीने के लिए कौशल हमारी प्रेरणा बनता है। यह हमें नवीन ऊर्जा देने का काम भी करता है।

आज, भारत के युवाओं की एक पीढ़ी न केवल अपना, बल्कि देश का भी भविष्य तय करने में योग्य, सक्षम और आश्वस्त है। हमने देखा है कि पिछले कुछ वर्षों में वैश्विक समुदाय के समक्ष भारत की छवि निरंतर बेहतर होती जा रही है। भारत के प्रति यह सम्मान तथा भारतीयों की सामर्थ्य और क्षमता को प्रधानमंत्री श्री मोदी द्वारा दुनिया के विभिन्न देशों में की गई यात्राओं के परिणाम के रूप में देखा जा सकता है।

पिछले कई दशकों की ऐतिहासिक निर्भरता से आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ना एक आदर्श बदलाव से कहीं अधिक है। स्वच्छ भारत अभियान, स्टार्टअप इंडिया, स्टैंडअप इंडिया, डिजिटल इंडिया और आयुष्मान भारत जैसे कार्यक्रमों ने न केवल राष्ट्रीय गौरव को बढ़ाया है, बल्कि इन कार्यक्रमों ने अपने-अपने तरीके से आत्मनिर्भरता को पोषित किया है।

प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में राष्ट्रीय कौशल विकास और उद्यमिता नीति के जरिए बड़े बदलावों की आधारशिला रखी गई है। आज राष्ट्र तेजी से आत्मनिर्भरता के जिस लक्ष्य की ओर अग्रसर है, उसमें स्टार्टअप, उद्यमिता और कौशल विकास की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इसे देखते हुए आज का समय सरकारी नौकरी के पीछे भागने का नहीं, बल्कि स्वयं का उद्यम स्थापित कर दूसरों को

रोजगार देने का है। सरकार ने हर क्षेत्र में उद्यमिता के संवर्धन के लिए सहायता के दरवाजे खोले हुए हैं।

इस अवसर पर देश की युवा पीढ़ी और विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्र के युवाओं से मेरा कहना है कि आपके भीतर असीमित ऊर्जा का स्रोत मौजूद है। आप देश के भावी कर्णधार हैं। देश की समृद्धि, खुशहाली एवं गरिमा का सबसे बड़ा दायित्व आपके ऊपर है। ज़रूरत है तो केवल दृढ़ इच्छाशक्ति, प्रतिबद्धता और संकल्प शक्ति की।

मेरा सभी युवाओं से यह भी कहना है कि आप पूरे मनोयोग से आगे बढ़ने का संकल्प लें, सरकार की कौशल विकास एवं प्रशिक्षण योजनाओं में सक्रिय भागीदार बनें, अपनी अभिरुचि वाले स्टार्टअप शुरू करने के लिए सरकार द्वारा दी जा रही सुविधाओं का लाभ उठाएं। स्वयं एक कुशल उद्यमी के रूप में आत्मनिर्भर बनें, दूसरों को रोजगार प्रदान करें और अपने कौशल एवं उद्यमशीलता से राष्ट्र की समृद्धि में अधिकाधिक योगदान दें।

मित्रों,

आप सभी जानते हैं कि हमारा देश आजादी के अमृत काल में प्रवेश कर चुका है। भारत विश्व गुरु बनने की राह पर चल रहा है। मुझे पूरा विश्वास है कि वर्ष 2047 में जब हम अपनी स्वतंत्रता का शताब्दी वर्ष मनाएंगे तब भारत विश्व गुरु के रूप में अपना दायित्व निभा रहा होगा।

मुझे खुशी है कि काउंसिल फॉर टीचर एजुकेशन फाउंडेशन (सीटीईएफ), असम द्वारा आयोजित यूथ कॉन्क्लेव के इस दूसरे चरण का महत्वपूर्ण विषय आज के संदर्भ में निश्चित रूप से सामयिक है। मैं आशा करता हूँ कि यह सम्मेलन हमारे युवाओं को भविष्य की बागडोर सौंपने की दृष्टि से कौशल प्रदान करने के लिए एक बहुत ही सार्थक मंच साबित होगा।

इसी विचार के साथ मैं कामना करता हूं कि हमारे सभी युवा जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए प्रेरित होंगे। अपने आपको सशक्त और कुशल बनाने के लिए सरकारी योजनाओं का लाभ लेंगे और भारत को विश्व गुरु बनाने के कुशल नेतृत्व में भागीदारी निभायेंगे। मेरी शुभकामनाएं सभी के साथ हैं।

धन्यवाद !

जय हिन्द !

जय भारत!